भारत - चीन संबंध

राजनीतिक संबंध

1 अप्रैल, 1950 को भारत चीन जनवादी गणराज्य के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने वाला पहला गैर समाजवादी ब्लाक का देश बना। प्रधानमंत्री नेहरू ने अक्टूबर, 1954 में चीन का दौरा किया। हालांकि 1962 में भारत - चीन सीमा संघर्ष संबंधों के लिए एक गंभीर आघात था, परंतु प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की 1988 में महत्वपूर्ण यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों में सुधार के चरण की शुरूआत हुई। 1993 में प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव की चीन यात्रा के दौरान भारत - चीन सीमा क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एल ए सी) पर शांति एवं अमन - चैन बनाए रखने के लिए करार पर हस्ताक्षर ने द्विपक्षीय संबंधों में बढ़ती स्थिरता एवं महत्व को प्रतिबिंबित किया।

राष्ट्राध्यक्षों / शासनाध्यक्षों के स्तर पर यात्राएं :

हाल के वर्षों में आठ प्रमुख यात्राओं के संचयी परिणाम से हमारे संबंधों में बदलाव आए हैं। इन यात्राओं में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 2003 में चीन यात्रा, प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की 2005 और 2010 में भारत की यात्रा, राष्ट्रपति हू जिंताओ की 2006 में भारत यात्रा, प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह की 2008 और 2013 में चीन यात्रा, प्रधानमंत्री ली किक्यांग की 2013 में भारत यात्रा तथा राष्ट्रपति शी जिनपिंग की 2014 में भारत यात्रा शामिल है। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने संबंधों एवं व्यापक सहयोग के लिए सिद्धांतों पर एक घोषणा पर हस्ताक्षर किया तथा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से सीमा प्रश्न के समाधान के लिए एक रूपरेखा तैयार करने के लिए विशेष प्रतिनिधि (एस आर) नियुक्त करने का भी परस्पर निर्णय लिया।

अप्रैल, 2005 के दौरान, प्रधानमंत्री वेन जियाबाओं की भारत यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने शांति एवं समृद्धि के लिए एक सामरिक एवं सहयोग साझेदारी स्थापित की, जबकि राजनीतिक पैरामीटरों एवं मार्गदर्शक सिद्धांतों पर एक करार पर हस्ताक्षर ने एस आर वार्ता के पहले चरण की सफल समाप्ति का संकेत दिया। नवंबर, 2006 में चीन के राष्ट्रपति हू जिंताओ की भारत यात्रा के दौरान, दोनों पक्षों ने एक संयुक्त घोषणा जारी की जिसमें सहयोग को गहन करने के लिए 10 सूत्रीय रणनीति का उल्लेख है। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने जनवरी, 2008 में चीन की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान "21वीं शताब्दी के लिए एक साझा विजन'' शीर्षक से एक संयुक्त दस्तावेज जारी किया गया। जब चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ दिसंबर, 2010 में भारत के दौरे पर आए थे तब दोनों पक्षों ने संयुक्त रूप से वर्ष 2015 के लिए 100 बिलियन अमरीकी डालर के द्विपक्षीय व्यापार का लक्ष्य निर्धारित किया।

चीन जनवादी गणराज्य की राज्य परिषद के प्रधानमंत्री श्री ली किक्यांग ने 19 से 21 मई, 2013 के दौरान भारत (दिल्ली - मुंबई) का राजकीय दौरा किया। इस यात्रा के दौरान, दोनों पक्षों ने आठ करारों पर हस्ताक्षर किए तथा एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया। संयुक्त वक्तव्य में जिन महत्वपूर्ण प्रस्तावों को शामिल किया गया उनमें से कुछ इस प्रकार हैं : वर्ष 2014 को भारत और चीन के बीच मैत्रीपूर्ण विनिमय वर्ष के रूप में घोषित करना तथा उच्च स्तरीय मीडिया मंच की पहली बैठक का आयोजन करना।

पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने 22 से 24 अक्टूबर, 2013 के दौरान चीन का आधिकारिक दौरा किया। सीमा, सीमापारीय नदियों, भारत में विद्युत उपकरणों की मरम्मत के लिए सेवा केंद्र स्थापित करने, सड़क परिवहन तथा नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित करारों पर हस्ताक्षर किए गए। इसके अलावा, दिल्ली - बीजिंग, कोलकाता -

कुनमिंग और बंगलौर - चेंगडु के बीच सिस्टर सिटी साझेदारी स्थापित करने के लिए तीन करारों पर भी हस्ताक्षर किए गए।

उप राष्ट्रपति माननीय श्री हामिद अंसारी ने 20 से 26 जून, 2014 के दौरान चीन का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान उप राष्ट्रपति ने राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की, उप राष्ट्रपति लिउ युवांचाओ के साथ बातचीत की, पंचशील की 60वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया तथा शांशी प्रांत में झियान का दौरा किया। औद्योगिक पार्क, सरकारी अधिकारियों का प्रशिक्षण तथा यारलुंग जांगबु नदी पर बाढ़ के मौसम के दौरान डाटा के आदान - प्रदान से संबंधित तीन करारों पर हस्ताक्षर किए गए। दो उप राष्ट्रपतियों ने संयुक्त रूप से भारत - चीन सांस्कृतिक संपर्क के विश्वकोष के अंग्रेजी एवं चाइनीज संस्करण का विमोचन किया।

चीन के राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग ने 17 से 19 सितंबर, 2014 के दौरान भारत का राजकीय दौरा किया। यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से मुलाकात की तथा भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ बातचीत की। इस यात्रा के दौरान, विभिन्न क्षेत्रों में कुल 16 करारों पर हस्ताक्षर किए गए जो इस प्रकार हैं : वाणिज्य एवं व्यापार, रेलवे, अंतरिक्ष सहयोग, भेषज पदार्थ, श्रव्य - दृश्य सह-निर्माण, संस्कृति, औद्योगिक पार्कों की स्थापना, सिस्टर सिटी व्यवस्था आदि। दोनों पक्षों ने नथुला पास से होते हुए कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए एक अतिरिक्त मार्ग खोलने के लिए एक एम ओ यू पर भी हस्ताक्षर किया। चाइनीज पक्ष भारत में दो चाइनीज औद्योगिक पार्क स्थापित करने पर सहमत हुआ तथा भारत में चीनी निवेश बढ़ाने के लिए अपनी मंशा व्यक्त की। दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय संबंध के सभी मुद्दों पर चर्चा की जिसमें राजनीतिक एवं सुरक्षा से संबंधित मुद्दे, आर्थिक संबंध तथा जन दर जन संपर्क शामिल हैं।

प्रधानमंत्री जी ने सीमा पर लगातार घटनाओं पर चिंता व्यक्त की। दोनों नेता इस बात पर सहमत हुए कि सीमा क्षेत्र में शांति एवं अमन चैन परस्पर विश्वास एवं भरोसे की एक आवश्यक आधारशिला है तथा हमारे संबंध की पूर्ण क्षमता को साकार करने के लिए सीमा पर शांति एवं अमन - चैन आवश्यक है। यह सुझाव दिया गया कि वास्तविक नियंत्रण रेखा को स्पष्ट करने से शांति एवं अमन - चैन बनाए रखने के प्रयासों में काफी योगदान प्राप्त होगा। वैश्विक महत्व के अनेक बहुपक्षीय मुद्दों पर भारत और चीन के हित एक जैसे हैं, जैसेकि जलवायु परिवर्तन, डब्ल्यू टी ओ, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का सुधार आदि। यह ब्रिक्स, जी-20 तथा अन्य मंचों के अंदर दोनों पक्षों के बीच घनिष्ठ सहयोग एवं समन्वय में प्रतिबिंबित होता है। विभिन्न स्तरों पर भारत और चीन के बीच बैठकें नियमित रूप से होती हैं जिसमें सर्वोच्च स्तर पर बैठकें भी शामिल हैं। दोनों पक्ष वार्ता एवं शांतिपूर्ण संवाद के माध्यम से तथा निष्पक्ष, तर्कसंगत एवं परस्पर स्वीकार्य ढंग से द्विपक्षीय मुद्दों का समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

उच्च स्तर पर हाल की अन्य यात्राएं :

चीन के विदेश मंत्री श्री वांग यी ने 8-9 जून, 2014 को चीन के विशेष दूत के रूप में भारत का दौरा किया। यात्रा के दौरान, उन्होंने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और विदेश मंत्री से मुलाकात की।

विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने भी म्यांमार में आसियान क्षेत्रीय मंच के दौरान अतिरिक्त समय में अगस्त में चीन के विदेश मंत्री श्री वांग यी से मुलाकात और फिर सितंबर, 2014 में न्यूयार्क में यू एन जीए सत्र के दौरान अतिरिक्त समय में उनसे मुलाकात की।

माननीय विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 1 से 3 फरवरी, 2015 के दौरान चीन जनवादी गणराज्य का आधिकारिक दौरा किया जिसके दौरान उन्होंने चीन के राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग से मुलाकात की, विदेश मंत्री श्री वांग यी के साथ औपचारिक बातचीत की और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अंतर्राष्ट्रीय विभाग मंत्री श्री वांग जियारूई के साथ भी बैठक की। विदेश मंत्री महोदया ने द्वितीय भारत - चीन उच्च स्तरीय मीडिया मंच का भी उद्घाटन किया तथा बीजिंग में अपने प्रवास के दौरान 'भारत आओ वर्ष' के उद्घाटन में भी भाग लिया। 2 फरवरी को विदेश मंत्री महोदया ने बैठक के दौरान अतिरिक्त समय में रूस के विदेश मंत्री श्री सर्गेई लावरोव से मुलाकात करने के अलावा रूस - भारत - चीन की 13वीं त्रिपक्षीय विदेश मंत्री बैठक में भी भाग लिया।

पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री शिव शंकर मेनन और राज्य कांसुलर यांग जिची के बीच भारत - चीन सीमा प्रश्न पर विशेष प्रतिनिधियों की 13वीं बैठक नई दिल्ली में 10 से 14 फरवरी, 2014 के दौरान हुई। 15वें चक्र की समाप्ति पर दोनों देशों के बीच भारत - चीन सीमा मामलों पर परामर्श एवं समन्वय के लिए एक कार्य तंत्र स्थापित करने पर सहमति हुई थी।

चीन से पार्टी नेताओं तथा भारत से राज्यों के मुख्यमंत्रियों के उच्चस्तरीय आदान - प्रदान को सुगम बनाने के लिए चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अंतर्राष्ट्रीय विभाग तथा विदेश मंत्रालय के बीच वर्ष, 2004 से एक विशेष व्यवस्था की गई है। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी तथा भारत में राजनीतिक दलों के बीच पार्टी दर पार्टी आदान - प्रदान नियमित रूप से होता है।

वाणिज्यिक एवं आर्थिक संबंध

पिछले कुछ वर्षों में व्यापार एवं आर्थिक संबंधों में तेजी से प्रगति हुई है। भारत - चीन द्विपक्षीय व्यापार, जो 2000 में मात्र 2.92 बिलियन अमरीकी डालर था, 2008 में बढ़कर 41.85 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया जिससे संयुक्त राज्य अमरीका को प्रतिस्थापित करते हुए माल के व्यापार में चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार बन गया। वर्ष 2014 तक भारत - चीन द्विपक्षीय व्यापार का मूल्य 70.65 बिलियन अमरीकी डालर था।

भारत की ओर से चीन को निर्यात का मूल्य 16.41 बिलियन अमरीकी डालर पर पहुंच गया, जबकि चीन द्वारा भारत को निर्यात का मूल्य 54.42 बिलियन अमरीकी डालर था। तथापि, चीन के मुकाबले में आज भी भारत बढ़ते व्यापार घाटे का सामना कर रहा है। 2014 में व्यापार घाटा 37.8 बिलियन अमरीकी डालर था। व्यापार के अलावा भारत चीन से परियोजना निर्यात के लिए भी सबसे बड़े बाजारों में से एक है। इस समय, 60 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक मूल्य की परियोजनाएं निष्पादन के अधीन हैं। चीन के आंकड़ों के अनुसार, सितंबर, 2014 तक भारत में चीनी निवेश 2.63 बिलियन अमरीकी डालर था, जबकि चीन में भारतीय निवेश 0.55 बिलियन अमरीकी डालर था।

सांस्कृतिक संबंध :

1955 में, तत्कालीन विदेश उप मंत्री श्री ए के चांडा की अध्यक्षता में पहले भारतीय सांस्कृतिक शिष्टमंडल ने चीन का दौरा किया। वर्ष 1988 से दोनों देश सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के माध्यम से अपने लोगों को एक साथ ला रहे हैं।

भारत - चीन सांस्कृतिक सहयोग की विस्तृत रूपरेखा मई, 1988 में हस्ताक्षरित सांस्कृतिक सहयोग करार में रखी गई जो कार्यान्वयन के लिए एक कार्यपालक सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम (सी ई पी) प्रदान करता है। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह की अक्टूबर, 2013 में चीन यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित नवीनतम सी ई पी में सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग का प्रावधान है जिसमें अभिनय कलाकारों, अधिकारियों, लेखकों, अभिलेखागारवेत्ताओं एवं पुरातत्वविदों की यात्राओं, सांस्कृतिक महोत्सवों, फिल्म महोत्सवों के आयोजन तथा मास मीडिया, युवा कार्यक्रम एवं खेल के क्षेत्र में आदान - प्रदान शामिल है।

2003 में, प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने लुयांग, हेनान प्रांत में भारतीय शैली का एक बौद्ध मंदिर निर्मित करने की प्रतिबद्धता की थी तथा राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने मई, 2010 में चीन की अपनी यात्रा के दौरान इस मंदिर का उद्घाटन किया। फरवरी, 2007 में, नालंदा में जुआनजंग स्मारक का उद्घाटन किया गया। जून, 2008 में, संयुक्त डाक टिकट जारी किए गए, एक डाक टिकट में बोध गया स्थित महाबोधि मंदिर को दर्शाया गया तथा दूसरे डाक टिकट में लुयांग स्थित सफेद घोड़ा मंदिर को दर्शाया गया। 2003 में, पीकिंग विश्वविद्यालय में एक भारतीय अध्ययन केंद्र स्थापित किया गया। शेन झेन विश्वविद्यालय, जिनान विश्वविद्यालय, फुडान विश्वविद्यालय, गुआंगडोंग विश्वविद्यालय में तथा शंघाई अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विश्वविद्यालय में भी भारतीय अध्ययन पीठ स्थापित की गई हैं। भारत - चीन राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ वर्ष 2010 में दोनों देशों में पूरे उत्साह के साथ मनाई गई। मार्च, 2012 में ब्रिक्स शिखर बैठक के लिए राष्ट्रपति हु जिंताओं की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों के नेताओं ने वर्ष 2012 को "मैत्री एवं सहयोग वर्ष" के रूप में मनाने का निर्णय लिया तथा दोनों देशों ने हमारे लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान - प्रदान को और सुदृढ़ करने का संकल्प किया।

भारत और चीन के बीच युवाओं के शिष्टमंडल का आदान - प्रदान वर्ष 2007 से जारी है। नवंबर, 2006 में चीन के राष्ट्रपति हु जिंताओं की भारत यात्रा के दौरान दोनों पक्ष युवाओं के शिष्टमंडल के परस्पर आदान - प्रदान के लिए एक पंचवर्षीय कार्यक्रम शुरू किया था। इस संदर्भ में, चीन ने अगले पांच वर्षों में भारत से 500 युवाओं को आमंत्रित किया था। आगे चलकर, दिसंबर, 2010 में चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ की भारत यात्रा के दौरान, दोनों पक्ष अगले पांच वर्षों में युवाओं के आदान - प्रदान की गतिविधियों को जारी रखने पर सहमत हुए। इसके अलावा, "भारत - चीन विनिमय वर्ष-2011" के अंग के रूप में चीन ने वर्ष 2011 के अंदर चीन आने के लिए भारत के 500 युवाओं को आमंत्रित किया। सितंबर, 2014 में, चीन के राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग की भारत यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने परस्पर समझ बढ़ाने में युवाओं के आदान - प्रदान के महत्व को स्वीकार करते हुए 2015 से 2019 के दौरान 200 युवाओं वार्षिक आदान - प्रदान को जारी रखने पर सहमति व्यक्त की।

प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह और प्रधानमंत्री ली किक्यांग की वर्ष 2013 में यात्रा के दौरान दोनों नेताओं ने वर्ष 2014 को भारत और चीन के बीच मैत्रीपूर्ण विनिमय वर्ष के रूप में घोषित किया। इस विशेष वर्ष के अवसर पर वर्ष 2014 के दौरान चीन के 12 शहरों में भारत महोत्सव की झलकियों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें भारतीय अभिनय कलाओं, आधुनिक भारतीय कलाकारों की प्रदर्शनियों को प्रदर्शित किया जा रहा है, दोनों देशों के बीच बौद्ध संपर्क को दर्शाया जा रहा है, खाद्य एवं फिल्म् महोत्सव आयोजित किए जा रहे हैं। इस महोत्सव के अंग के रूप में कला क्षेत्र, संगीत नाटक अकादमी तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रायोजित एक बालीवुड मंडली ने चीन का दौरा किया। संगीत नाटक अकादमी ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांतों की 60वीं वर्षगांठ के अवसर पर ग्रेट हाल ऑफ पीपुल में आयोजित स्वागत समारोह में अपनी कला का प्रदर्शन किया। स्थानीय लोगों को भारतीय प्रामाणिक व्यंजनों का स्वाद चखाने के लिए बीजिंग, किंगडाओ, शंघाई, हांगकांग जैसे शहरों में खाद्य महोत्सव का भी आयोजन किया गया। आयुष विभाग, भारत सरकार के सहयोग से बीजिंग, शंघाई और दाली में

जुलाई, 2014 में योग महोत्सव का भी आयोजन किया गया। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के सहयोग से बीजिंग, हांगझू, ग्वांगझू, किंगडाओ तथा झियान जैसे शहरों में भारतीय फिल्म महोत्सव का भी आयोजन किया गया।

दिसंबर, 2010 में चीन के प्रधानमंत्री वेन जियाबाओं की भारत यात्रा के दौरान भारत और चीन के नेताओं ने एक परियोजना पर सहमति व्यक्त की जिसके तहत भारत - चीन सांस्कृतिक संपर्कों का एक विश्वकोष संकलित किया जाना है। भारत - चीन सांस्कृतिक संपर्कों के विश्वकोष का विमोचन अंग्रेजी एवं चाइनीज दोनों रूपांतरों में बीजिंग में 30 जून, 2014 को भारत के माननीय उप राष्ट्रपति की चीन यात्रा के दौरान किया गया। इस विश्वकोष में कुल 700 से अधिक प्रविष्ठियां हैं जिनके माध्यम से व्यापार, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच संपर्क एवं आदान - प्रदान के समृद्ध इतिहास को सारांश रूप में प्रस्तुत किया गया है।

शैक्षिक संबंध :

भारत और चीन ने 2006 में शैक्षिक आदान - प्रदान कार्यक्रम (ई ई पी) पर हस्ताक्षर किया जो दोनों देशों के बीच शैक्षिक सहयोग के लिए एक छत्रछाया करार है। इस करार के तहत एक - दूसरे के देश में उच्च अध्ययन की मान्यता प्राप्त संस्थाओं में दोनों पक्षों द्वारा 25 छात्रों को सरकारी छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। भारत द्वारा प्रदान की जाने वाली 25 छात्रवृत्तियां हिंदी में एक वर्षीय प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम की पढ़ाई करने के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आई सी सी आर) द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं। इसके अलावा, चीन के छात्रों को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में हिंदी सीखने के लिए हिंदी की पढ़ाई करने के लिए हर साल छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। वर्ष 2014-15 के लिए, इस स्कीम के तहत 6 छात्रवृत्तियों की पेशकश की गई है।

2010 में, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी बी एस ई) के पाठ्यक्रम में मंडारिन चाइनीज को विदेशी भाषा के रूप में शुरू करने का निर्णय लिया गया। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा कंफ्यूशियस संस्थान के बीच अगस्त, 2012 में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया जहां दोनों हस्ताक्षरकर्ता शैक्षिक स्टाफ, शिक्षकों एवं प्रशिक्षणार्थियों का आदान - प्रदान करने और भारत में स्कूलों में द्वितीय भाषा के रूप में मंडारिन चाइनीज पढ़ाने के लिए प्रणाली एवं संरचना पर सूचना का आदान - प्रदान करने के लिए सहमत हुए। इस एम ओ यू के अंग के रूप में, चीन के 22 शिक्षकों का पहला बैच वर्ष 2014 के पूर्वार्ध से एक साल के लिए चुनिंदा सी बी एस ई स्कूलों में पढ़ा रहा है।

दोनों देशों के बीच शिक्षा क्षेत्र में सहयोग की वजह से चीन में भारतीय छात्रों की संख्या बढ़ गई है। 2013 की स्थिति के अनुसार, चीन के विभिन्न विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषय क्षेत्रों में 10237 भारतीय छात्र पढ़ाई कर रहे थे। इसी तरह, चीन के लगभग 2000 छात्र भारत में विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में पढ़ाई कर रहे हैं।

उपयोगी संसाधन :

भारतीय दूतावास, बीजिंग की वेबसाइट :
http://www.indianembassy.org.cn/

***

जनवरी, 2015